12

निर्णय लेने का समय!

(मत्ती 6:19-24)

एक आदमी की पुरानी कहानी है जिसे आलुओं का एक बड़ा ढेर छीलने का काम दिया गया था। उसे काम पर लगाने वाले व्यक्ति ने उसे बताया, ''उन्हें छील लेने के बाद छोटे, मध्यम और बड़े आकार के अनुसार तीन ढेर लगा देना।'' एक घण्टा या थोड़ी देर बाद काम करने वाले ने उस आदमी को देखा और उसे थका हुआ पाया। ''मुझे नहीं पता था कि आलू छीलना इतना कठिन काम है,'' काम देने वाले ने कहा। उस आदमी ने उत्तर दिया ''आलू छीलना इतना कठिन नहीं है। थकाया तो उस निर्णय लेने की बात ने है!''

यह कहानी पुरानी हो सकती है, पर हम में से कई लोग आलू छांटने वाले की तरह ही हैं क्योंकि हमें निर्णय लेना पसन्द नहीं होता। हमें हर रोज़ निर्णय लेने पड़ते हैं। कुछ निर्णय अपेक्षाकृत अनावश्यक होते हैं, जैसे नाश्ते में क्या लेना है या आज क्या पहनना है।[1] और निर्णय हैं, जो इससे महत्वपूर्ण होते हैं, जैसे काम करने का निर्णय या शादी करने का निर्णय इन निर्णयों का हमारे जीवनों पर प्रभाव पड़ता है। परन्तु कोई भी निर्णय प्रभु की सेवा करने के निर्णय से ऊपर नहीं है। यह निर्णय न केवल हमारे वर्तमान को प्रभावित करता है बल्कि हमारे अनन्तकाल को भी प्रभावित करेगा।

हमारे पाठ का वचन पाठ निर्णय लेने अर्थात जीवन बदलने वाले यानी *अनन्तकाल को बदलने वाला* निर्णय है। इस वचन में हमें तीन पसन्द मिलती हैं जिनमें से हम सब को चुनना होगा।

पृथ्वी या स्वर्ग? (6:19-21)

पृथ्वी पर नहीं

पहली पसन्द 19 से 21 आयतों में मिलती है जिसमें हमें पृथ्वी और स्वर्ग में से चुनना होता है। इस आयत का आरम्भ इन शब्दों से होता है: ''अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं'' (आयत 19)।

ये शब्द हर प्रकार की सम्पत्ति पर बैन लगाने की मंशा से नहीं थे। पौलुस ने लिखा कि ''परमेश्वर ... हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से देता है'' (1 तीमुथियुस 6:17; 4:4 भी देखें)। न ही ये आयतें भविष्य के लिए उपाय करने से रोकने के लिए दी गई थीं। सुलैमान ने चींटी की प्रशंसा की, जो शीतकाल के लिए अपना भोजन इकट्ठा कर लेती है (नीतिवचन 6:6-8)। तो फिर यीशु की क्या चिन्ता थी? उस प्रश्न का उत्तर ''अपने लिए'' शब्दों में मिल जाता है जहां कहा गया है ''*अपने लिए* पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो।'' जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने यीशु

की ताड़ना की समीक्षा इस प्रकार की है:

> जिस बात की यीशु ने अपने अनुयायियों को मनाही की है, वह वस्तुओं का *स्वार्थपूर्ण ढंग से* संग्रह ... ; फिजूलखर्ची और विलासितापूर्ण जीवन; कठोर मन होना, जो संसार के शोषित लोगों की विराट आवश्यकता को पूरा नहीं करता; मूर्खतापूर्ण भावना कि व्यक्ति के जीवन में सम्पत्ति की बहुतायत है [लूका 12:15] और भौतिकवाद, जो हमारे मनों को पृथ्वी पर बांध देता है।[2]

क्या कोई यह सोच रहा है कि ''प्रचार करते रहो! अपने सारे खज़ाने सहित धनवान लोगों को उस संदेश की आवश्यकता है! पर यह वचन निश्चित रूप से मेरे लिए नहीं है। मेरे पास तो कोई खज़ाना नहीं है। मैं तो रोज़ की रोटी मुश्किल से कमाता हूं?'' यह सच है कि हमारे वचन पाठ में ज़ोर भौतिक खज़ाने पर है, पर इसे हर किसी पर लागू किया जा सकता है। हम में से हर किसी के पास कुछ न कुछ है, जिसे हम ''इकट्ठा'' करते हैं यानी कुछ ऐसा जो हमारे लिए महत्वपूर्ण है। यह परिवार के लोग, घर, नौकरी, कौशल, शारीरिक शक्ति, अच्छा नाम, या कोई भी ऐसी चीज़ हो सकती है। क्लोविस जी. चैपल ने लिखा है, ''हमारा खज़ाना वही होता है जिससे हम सबसे अधिक प्रेम करते हैं। यही वह चीज़ है जिसे पाने की हम सबसे अधिक तड़प रखते हैं, यदि यह हमारा नहीं है। यह वही है जिसे खाने का डर सबसे अधिक होता है, चाहे यह अभी हमारे पास ही है।''[3] ऐसी चीज़ों को महत्व देने और इनका आनन्द लेने में कोई बुराई नहीं है, पर यदि ये चीज़ें हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण बन जाएं यानी इस पृथ्वी पर हमारा ध्यान इन्हीं पर हो तो कुछ गड़बड़ है। कुछ है जो बहुत गलत है।

हमारे वचन पाठ में यीशु ने पृथ्वी पर धन जमा न करने के कई कारण बताए हैं। उसकी पहली अपील मन यानी सहजबुद्धि को: ''अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं'' (आयत 19)।

संसार के जिस भाग में मैं रहता हूं वहां सांसारिक धन आमतौर पर बैंकों में होता है, पर संसार के अन्य भागों में ऐसा नहीं है। यकीनन यह प्राचीन जगत में भी नहीं था। ज्योतिषियों ने बालक यीशु के सामने जब ''अपना धन'' खोला था तो उन्होंने यीशु और उसके परिवार को कोई चेक या नकदी नहीं दी थी। उनका धन सोना, लोबान और गन्धरस था (मत्ती 2:11)। ये चीज़ें सम्भवतया इसलिए चुनी गई थीं कि कीमती होने के बावजूद वे छोटी, ले जाने में आसान और पश्चिम के अपने लम्बे सफ़र में छिपानी आसान थीं।

यीशु के समय में व्यक्ति की सम्पत्ति कपड़े,[4] अनाज,[5] कीमती धातुओं और जवाहरात सहित कई चीज़ों में निवेश की जाती थी। ये सभी सम्पत्तियां नष्ट होती थीं या चुराई जा सकती थीं (और हैं)। पहला नाश करने वाला यीशु ने *कीड़े* बताया। कीड़ा पहली सदी के अति महंगे मूल्य के सजावटी कपड़े को नष्ट कर सकते थे। कीड़े रखे गए कपड़ों पर अण्डे दे देते हैं और उन अण्डों को कपड़ा खाने वाले लारवा में सेते हैं। यदि आप थोड़ी देर के लिए रखे गए किसी मन पसन्द कपड़े में छोटे-छोटे छेद देखकर कभी चौंके हों तो आप जानते हैं कि मैं क्या कहना चाह रहा हूं।

NASB तथा अन्य अनुवादों में *दूसरा नाश करने वाला* ''काई'' को बताया गया है। अनुवादित शब्द ''काई'' (*brosis*) का अर्थ ''खाना'' है।[6] इसे ''खाने वाला'' माना जा सकता

है। इस शब्द का इस्तेमाल उस जंग के लिए किया जा सकता है, जो लोहे के सामान या क्षय से कुछ भी खा जाता है जिससे कीमती धातुओं का मूल्य कम हो जाता है। इस शब्द में एक जगह रखे अनाज को चूहे और अन्य फसलनाशक जन्तु भी हो सकता है। यह बढ़ती फसल को नष्ट करने वाले कीड़ों के लिए भी हो सकता है।

यीशु द्वारा बताया तीसरा विनाश वे चोर थे, जो ''सेंध लगाते और चुराते हैं।'' फलस्तीन के अधिकतर घर सूखी, धूप में पकाई ईंटों से बने होते थे। दरवाज़ों को ताला लगे होने या बन्द होने के बावजूद चोर चाहे तो दीवार काटकर घर में रखी कीमती चीज़ों को चुरा सकता था। प्राचीन जगत में कुछ भी सुरक्षित नहीं था।

कोई प्रतिक्रिया दे सकता है, ''मैं धन्यवादित हूं कि अब ऐसा नहीं होता। मैं कीड़ों के लिए सप्रे कर देता हूं, फसल के कीड़ों को पकड़ लेता हूं और चोरों को भगाने के लिए मेरे पास आधुनिकतम सुरक्षा प्रणाली है।''[17] परन्तु हर सम्भव सावधानी बरत लेने के बावजूद आज भी यह सच है कि जैसे सुलैमान ने कहा था कि जो चीज़ें आपके पास हैं वे खुद पंख लगाकर उड़ सकती हैं (नीतिवचन 23:5)। सम्पत्ति नष्ट करने वालों की सूची लगभग अनन्त है:

गम्भीर बीमारी
कारोबार ठप्प होना
नौकरी छूट जाना
आर्थिकता का डूब जाना
धन का सही उपयोग न होना
प्राकृतिक आपदाएं
युद्ध

यदि आप अपनी सम्पत्ति को जीवन भर रख भी सकते हैं तौ भी एक दिन तो आप मरेंगे (इब्रानियों 9:27) और आपको उस सब को पीछे छोड़कर जाना पड़ेगा। एक आदमी ने, जब वह मरने वाला था, अपनी सारी सम्पत्ति को हीरों और सोने के सिक्कों में बदल डाला। उसने हीरों को निगल लिया और सिक्कों को अपने कफ़न के साथ सिलवा लिया।[18] उसकी सम्पत्ति कब्र तक उसके साथ गई, पर आने वाले संसार में नहीं। अय्यूब के शब्द यहां उपयुक्त लगते हैं: ''मैं अपनी मां के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊंगा'' (अय्यूब 1:21)।

यूहन्ना ने लिखा, ''संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं'' (यूहन्ना 2:17क)। कोई भी अपने आस-पास नज़र मारकर देख सकता है कि, न केवल भौतिक सम्पत्तियों के लिए बल्कि लगभग हर चीज़ के लिए जिसे लोग पृथ्वी पर इकट्ठा करते हैं। स्वास्थ्य जाता रहता है। सुन्दरता चली जाती है। शक्ति खत्म हो जाती है। कौशल कम हो जाता है। इसके अलावा जिसे हम नहीं खोते वह आमतौर पर अपना आकर्षण खो देता है या सन्तुष्ट करना बन्द कर देता है। इसलिए यीशु ने आज्ञा दी, ''अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो'' क्योंकि वह धन अलोप हो जाएगा।

परन्तु ''स्वर्ग में''

यीशु ने आगे कहा, ''परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं'' (आयत 20)। स्वर्ग में ''न तो कीड़ा है, न चूहे और न वहां लुटेरे ही हैं। स्वर्ग में बैंकों''[9] में हर ''जमा की हुई चीज़'' सुरक्षित है। पतरस ने ''एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिए जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी गई है'' की बात की (1 पतरस 1:4)।

हम ''स्वर्ग में धन इकट्ठा'' कैसे करते हैं? वचन में ज़ोर अपनी भौतिक आशिषों का इस्तेमाल परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए दिया गया है। यीशु ने धनवान जवान हाकिम से कहा, ''जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे; और *तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा;* और आकर मेरे पीछे हो ले'' (मत्ती 19:21)। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया:

> इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे, कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से देता है। और भलाई करें, और भले कामों में धनी बनें; और उदार और सहायता देने में तत्पर हों। *और आगे के लिए एक अच्छी नेव डाल रखें,* कि सत्य जीवन को वश में कर लें (1 तीमुथियुस 6:17-19)।

कहते हैं कि ''हम इसको अपने साथ नहीं ले जा सकते पर हम इसे आगे भेज सकते हैं।'' ऐसी ही सच्चाई इस प्रकार व्यक्त की गई है: ''जिसे हम रखते हैं, उसे खाते हैं; परन्तु जो हम देते हैं, वह हमारे पास है।''

परन्तु स्वर्ग में धन इकट्ठा करने का नियम भौतिक आशिषों का इस्तेमाल करने की मनाही नहीं है। जो कुछ हम करते हैं उसमें परमेश्वर को पहल देने पर (मत्ती 6:33), हम स्वर्ग में धन इकट्ठा कर रहे हैं। पहाड़ी उपदेश में बताए गए जीवन शैली के अनुसार रहते हुए स्वर्ग में हम अपने लिए धन जमा कर रहे होते हैं।

स्वर्ग में धन इकट्ठा करना आवश्यक क्यों है? जैसा हमने देखा है कि यीशु की पहली अपील *मन* से थी कि पृथ्वी का धन अस्थाई है। उसकी दूसरी अपील *हृदय* यानी भावनाओं से थी। आयत 21 में उसने कहा, ''क्योंकि जहां तेरा धन है, वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।''

हम समय, पैसा और ऊर्जा उसी बात में लगाते हैं जिसमें हमारा धन होता है। यीशु कुछ अलग बता रहा था जो मिलता-जुलता तो था पर था अलग। वह यह कह रहा था कि यदि हम पृथ्वी पर धन जमा करते रहेंगे तो हमारा दिल उसी धन पर लगा रहेगा। यदि हमारा धन स्वर्ग में अधिक है तो हमारा ध्यान वहीं रहेगा। ''दिल धन के पीछे चलता है जैसा कि ... सूरजमुखी सूरज [के पीछे]''[10]

अधिक पुरानी बात नहीं है, मैं मैल स्टीनेट की क्लास में था। उन्होंने डेविड लिविंगस्टोन के बारे में बताया जो तीस से अधिक वर्षों तक अफ्रीका के लिए एक मिशनरी था (1840-1873)। जब डॉक्टर लिविंग स्टोन की मृत्यु हुई तो उनकी देह को इंग्लैंड में वापस ले जाया गया, पर उनका दिल उसी पेड़ के नीचे, जहां उसकी मृत्यु हुई थी, दफ़ना दिया गया। भाई स्टीनेट ने जहां हम क्लास में बैठे थे पूछा, ''यदि किसी दूसरे देश के लोग एक साल तक आपके पीछे चलते

रहे हों तो वे आपके दिल को कहां दफ़नाएंगे? आपके बैंक में, आपके घर में, आपके काम के स्थान में, या कहां?''[11]

हमारे दिल कहां हैं? हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है? पौलुस ने लिखा, ''सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं, परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ'' (कुलुस्सियों 3:1, 2)।

अन्धकार या ज्योति? (6:22, 23)

हमारे वचन पाठ की दूसरी पसन्द अंधकार और ज्योति में से चुनने की है। इस पसन्द की बात करते हुए यीशु ने एकरूपता का इस्तेमाल किया जो शायद उसके समय में आम थी[12] और उसके सुनने वालों के लिए समझना आसान था। परन्तु आज यह आम नहीं है, जिस कारण हम इससे उलझ जाते हैं। यीशु ने यह कहा था:

> शरीर का दीया आंख है। इसलिए यदि तेरी आंख निर्मल हो तो तेरा सारा शरीर में भी उजियाला होगा। परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर भी अंधियारा होगा; इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है यदि अंधकार हो तो वह अंधकार कैसा बड़ा होगा! (आयतें 22, 23)।

रूपक

यीशु एक विस्तृत रूपक का इस्तेमाल कर रहा था।[13] रूपक को समझने के लिए पहले उस अवधारणा को समझना आवश्यक है जिस पर यह रूपक आधारित है। इस मामले में यह आंख से शरीर का सम्बन्ध है।

''शरीर का दीया आंख है'' यानी आंख शरीर को ज्योति और दृष्टि देती है। आंख में आकृतियां प्रवेश नेत्र रग से मस्तिक में चली जाती हैं। फिर मस्तिष्क उस सूचना का इस्तेमाल शरीर को नियन्त्रण में रखते हुए करता है। यदि आंख अच्छी (''निर्मल'') है तो यह मस्तिष्क को सही सूचना देती है। परन्तु यदि आंख बुरी है यानी इसमें मोतिया, ग्लूकोमा या कोई और खराबी है तो यह मस्तिष्क को जाने वाली सूचना में गडबड़ हो जाती है। यदि आंख अन्धी हो गई है, तो मस्तिष्क में कोई सूचना नहीं है। शरीर में ज्योति लाने के लिए एकमात्र बड़ा अंग केवल आंख ही है; इसलिए यदि यह अन्धेरा है तो सच में ''कितना बड़ा अंधेरा है!''

संदेश?

शरीर से आंख के सम्बन्ध को समझना कठिन नहीं है, पर उस सम्बन्ध की बात करके यीशु किस सच्चाई का संदेश देना चाह रहा था? यीशु के संदेश को समझने की कुंजी के संदर्भ को ध्यान में रखना है। इससे पहली आयत (आयतें 19-21) पृथ्वी पर भौतिक सम्पत्ति जमा करने के विरुद्ध चेतावनी देती है। इससे अगली आयत (आयत 24) भौतिक सम्पत्ति से बढ़कर परमेश्वर को चुनने को। तो फिर यह निष्कर्ष निकालना कि आयतें 22 और 23 मूल रूप में उसी पर हैं कि हम भौतिक सम्पत्ति को कैसे लेते हैं, तर्कसंगत है।

आंख का वर्णन करते हुए अनुवादित शब्दों ''निर्मल'' और ''बुरी'' में अन्तर पर विचार करने की समझ बढ़ सकती है। ''निर्मल'' का अनुवाद *haplous* से किया गया है। शारीरिक आंख पर लागू करने पर, *haplous* का अर्थ ''साफ़, खरा, स्वस्थ'' हो जाता है।[14] परन्तु इस शब्द का मूल अर्थ ''एक वचन'' ही रहता है। *Haplous* का इस्तेमाल इस अर्थ मे इफिसियों 6:5 और कुलुस्सियों 3:22 में हुआ है और दोनों संदर्भों में इसका अनुवाद ''सीधाई'' हुआ है। NASB में जहां ''मन की निष्कपटता'' है वहीं KJV में उन आयतों में ''मन ... की एकाग्रता'' है। हमारे वचन पाठ को लागू करते हुए सिखाने वाले और प्रचारक आमतौर पर ''एक मन'' होने की बात करते हैं (''दो मन'' होने के बजाय [देखें याकूब 1:8])। यह परिभाषा इस रूपक को आयत 24 के विचार से मिलाती है कि कोई व्यक्ति दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। जैसे दोचित्ता व्यक्ति करने की कोशिश करता है। *Haplous* का अर्थ ''उद्धार'' भी हो सकता है। इस शब्द का एक रूप रोमियों 12:8 और 2 कुरिन्थियों 8:2 में ''उदारता'' अनुवाद किया गया है।

''बुरी'' का अनुवाद ''बुराई'' के लिए शब्द *poneros* से किया गया है।[15] आंख पर लागू करने पर इसका अर्थ ''बुरी स्थिति में, बीमार'' होता है। हमारी चर्चा से मेल खाती बात यह है कि पुराने नियम के यूनानी अनुवाद (सप्तत्ति या LXX) में बुरी आंख का इस्तेमाल कई बार कंजूसी के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए व्यवस्थाविवरण 15:9 देखें, जहां इस वाक्यांश का इस्तेमाल हुआ है: ''... और अपनी आंख तू अपने उस दरिद्र भाई की ओर से बुरी करके उसे कुछ न दे'' (KJV)। यदि हम अपने वचन पाठ के लिए इस बात का इस्तेमाल करें तो अन्तर ''उदार आंख'' होने या ''कंजूस आंख'' होने में है।

अनुवादित शब्दों ''निर्मल'' और फिर ''बुरी'' के सम्भावित अर्थों में से चुनना नहीं है। परमेश्वर हम से अपनी सम्पत्ति के प्रति *अस्वस्थ* नहीं बल्कि *स्वस्थ* व्यवहार चाहता है। हमें परमेश्वर की बातों के सम्बन्ध में *एक मन* होना आवश्यक है जिससे हम सदा उसके राज्य को पहल दें (आयत 33)। ऐसा होने पर हम दूसरों की सहायता करने से *कंजूस* नहीं होंगे बल्कि हमारी पहचान उदारता से होगी।

आज भी हमारे पास ऐसे शब्द और वाक्यांश हैं जिनमें ''आंख'' शब्द का इस्तेमाल होता है। जब मैं कहता हूं ''आई सी'' तो मेरे कहने का अर्थ होता है ''मुझे समझ है।'' हम ''अन्तरदृष्टि'' के महत्व और जीवन पर ''सही दृष्टिकोण'' होने की आवश्यकता की बात करते हैं। हम इसे या उसे ''सही प्रकाश में देखने'' की आवश्यकता की बात करते हैं। 22 और 23 आयतों को लागू करते हुए हम ''आंख'' का विचार इस ढंग से ले सकते हैं जैसे हम जीवन को *देखते* और ''शरीर'' को जैसे हम हैं, जो हमारे जीवनों में पाया जाता है।

जीवन पर हमारा दृष्टिकोण हमारे पूरे व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। यदि हमारा दृष्टिकोण स्वस्थ है, यदि हम परमेश्वर के प्रति एक मन हैं जो हमें दूसरों के प्रति उदार बनाता है तो हमारा पूरा व्यक्तित्व ही ज्योति से भरा हुआ है। दूसरी ओर यदि हमारा दृष्टिकोण अस्वस्थ है, यदि हमारी मंशाएं उलझन वाली हैं और ऐसा प्रगटावा करती हैं कि हमें मुट्ठी दबाकर रखने वाले या कंजूस बनाता है तो यह तो ऐसा होगा, जैसे हमारा पूरा अस्तित्व ही अन्धकार से भरा है। यदि वह जिसे हमें रौशनी से भरना चाहिए (उचित दृष्टिकोण) अन्धकार से भरा है तो हमारे मनों में अन्धेरा कितना अधिक है!

शास्त्री और फरीसी उन लोगों में से थे, जो यीशु के दिमाग में रहते थे। उन्हें लगता था कि वे ज्योति में हैं तौभी यीशु ने कहा कि वे अन्धकार में हैं। आज बहुत से लोग अपने आपको ''जागृत'' मानते हैं। उन्हें यह समझ नहीं है कि वे ''अन्धियारे में'' रहते हैं ''... इसलिए कि वे परमेश्वर के वचनों के विरुद्ध चले, और [उन्होंने] परमप्रधान की सम्मति को तुच्छ जाना'' (भजन संहिता 107:10, 11)। ''अन्धकार उसे जो यह है समझने में नाकामी के लिए और खतरनाक है।''[16]

धन या परमेश्वर? (6:24)

हमारे वचन पाठ की अन्तिम पसन्द धन और परमेश्वर के बीच है। वास्तविक्ता में सभी पसन्दें इसी पर हैं। क्या आपकी मुख्य चिन्ता पृथ्वी पर धन जमा करने की है? तो फिर आप धन को चुन रहे हैं। क्या आपकी अधिक चिन्ता स्वर्ग में धन इकट्ठा करने की है? तो फिर आप परमेश्वर को चुन रहे हैं। क्या आपकी समझ जो सचमुच में आवश्यक है क्या अन्धियारा हो गई है? यह इस बात का संकेत है कि आपने धन को चुना है। क्या आपकी प्राथमिकताएं उसमें हैं जो सदा तक रहेगा? यह दिखाता है कि आप परमेश्वर को चुन रहे हैं और ज्योति से भरे हैं।

चुनने की आवश्यकता

पहले यीशु ने ज़ोर दिया कि परमेश्वर और धन में से एक को चुनना क्यों आवश्यक है। आयत 24 में उसके आरम्भिक शब्दों को ''यीशु की सबसे यादगारी बातों में से एक'' कहा जाता है[17]: ''कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर[18] और दूसरे से प्रेम रखेगा; वह एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा'' (आयत 24क, ख)।

कोई आपत्ति करता है, ''पर एक आदमी दो नौकरियां कर सकता है और दो बॉसों के लिए काम कर सकता है।'' यीशु कर्मचारियों से नहीं, बल्कि *दासों* से बात कर रहा था। अनुवादित शब्द ''सेवा'' (*douleuo*) का अर्थ ''*doulos* ['गुलाम'] के रूप में सेवा करना''[19] है। ए. एच. मैक्नेल ने लिखा है, ''लोग दो नियोक्ताओं के लिए काम कर सकते हैं, पर कोई गुलाम दो मालिकों की सम्पत्ति नहीं बन सकता।''[20] आर. वी. जी. टास्कर ने अवलोकन किया है, ''एक ही स्वामित्व और पूर्णकालिक सेवा दासत्व का सार हैं।''[21]

कइयों ने दो स्वामियों की सेवा करने का प्रयास किया है। पुराना नियम कहता है कि कई ''जातियां यहोवा का भय मानती तो थीं,'' पर वे ''खुदी हुई मूर्तों की उपासना भी करती रहीं'' (2 राजाओं 17:41; देखें आयतें 24-41)। आज कुछ लोग रविवार के दिन प्रभु की सेवा करने कोशिश करते हैं, जबकि सप्ताह के शेष दिनों में वे पूरी तरह से अपने आपको संसार को दे देते हैं। परन्तु यीशु ने इस विषय में स्पष्ट कहा, ''कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता।''

दो विचार

यीशु के दिमाग में दो स्वामी कौन थे? जैसा कि पहले कहा गया है, वह परमेश्वर या धन दोनों में से एक को चुनने की बात पर विचार कर रहा था। आयत 24 के अन्तिम भाग में यीशु कहता है ''तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।''

अनुवादित शब्द ''धन'' (*mamonas*) का अनुवाद KJV में ''mammon'' किया गया है। ''मैमन धन के लिए अरामी भाषा के शब्द का एक यूनानी लिप्यंतरण'' है।[22] इस आयत में मैमन/धन[23] को दास-स्वामी के रूप में व्यक्तिगत[24] बनाया गया है। जैक पी. लुईस ने लिखा है, ''उस आदमी के पास कई लोग होते हैं जिससे उसे लगता हैकि वे उसके हैं।''[25] कहते हैं कि धन अच्छा सेवक तो है पर कठोर स्वामी भी। शायद आपको एक व्यक्ति की बात याद हो जिसका हर काम धन से और उसे खरीदने से चलता था। परन्तु हम इसे अपने ऊपर लागू करते हैं। हम में से अधिकतर लोग कुछ हद तक शायद अनजाने में अपने जीवन पर धन को नियन्त्रण करने की अनुमति देने के दोषी हैं।

ध्यान दें कि यीशु ने यह नहीं कहा था कि हम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा *न करें,* बल्कि उसने कहा कि हम परमेश्वर और धन की सेवा *नहीं* कर सकते। यह तो ''या तो/या'' वाली स्थिति है ''वह *एक से* मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा'' (आयत 24ख)। इन दोनों स्वामियों के प्रति समर्पित होने के प्रयास में शामिल उलझन पर विचार करें:

> उनके आदेश पूरी तरह से एक-दूसरे के विरुद्ध हैं। एक तो आपको विश्वास से चलने की आज्ञा देता है जबकि दूसरा देखकर चलने की आज्ञा देता है; एक दीन होने को और दूसरा घमण्डी होने को; एक अपना ध्यान ऊपर की ओर लगाने को और दूसरा संसार की बातों पर लगाने को कहता है; एक अदृश्य और अनन्त वस्तुओं पर जबकि दूसरा दिखाई देने वाली और अस्थाई चीज़ों पर लगाने को; एक चाहता है कि आपकी [नागरिकता] स्वर्ग में हो जबकि दूसरा इसे धूल से जोड़े रखना चाहता है; एक तो किसी बात की [चिन्ता से भरे] न होने को जबकि दूसरा हर चिन्ता करने को; एक जो कुछ हमारे पास है उस पर सन्तुष्ट होने को जबकि दूसरा नरक की तरह अपनी इच्छाओं को बढ़ाने को कहता है; एक तो [देने] को तैयार है जबकि दूसरा छीनने को; एक दूसरों की चीज़ों को देखने पर जबकि दूसरा अपनी ही चीज़ों को देखने पर ज़ोर देता है; एक तो सृष्टिकर्त्ता में आनन्द ढूंढ़ने को जबकि दूसरा सृष्टि में आनन्द ढूंढने को कहता है। क्या यह स्पष्ट नहीं है [कि] ऐसे दो स्वामियों की सेवा नहीं हो सकती?[26]

शैतान अपने प्रस्तावों के औज़ार के रूप में धन का इस्तेमाल करता है और उसे दोचित्ते मन से कोई दिक्कत नहीं है। ऐसा इसलिए क्योंकि परमेश्वर और धन दोनों की सेवा करने की कोशिश करने वाले व्यक्ति ने वास्तविकता में परमेश्वर को ठुकरा दिया है। परमेश्वर विभाजित मन को सहन नहीं करेगा। उसने कहा है, ''मैं यहोवा हूं, मेरा नाम यही है; अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूंगा'' (यशायाह 42:8क)।

ई. स्टैनली जोन्स ने लिखा है, ''भौतिक वातावरण के बीच आत्मिक जीवन जीने के योग्य होना धर्म की पुरानी समस्या रही है और इस समय भी है।''[27] मसीही रूप में हमारी चुनौतियों में से एक संसार में रहते हुए इस पर विजय पाना होना है (1 यूहन्ना 5:4)। कइयों ने अपने आपको संसार से अलग रखकर यानी एकांत में रहते हुए दूरी बनाकर इस समस्या का समाधान करने की कोशिश की है। यह वह समाधान नहीं है, जो परमेश्वर चाहता है। हमारे लिए उसकी इच्छा यह है कि हम संसार में रहें पर ''संसार के नहीं'' (यूहन्ना 17:11, 16), यानी हम सांसारिक चीज़ों

के बजाय परमेश्वर को चुनें। तभी, और तभी हम ''पृथ्वी का नमक'' और ''जगत की ज्योति'' बन सकते हैं (मत्ती 5:13, 14)।

सारांश

निर्णय, निर्णय, निर्णय —हम में से हर किसी को हर रोज़ निर्णय लेने पड़ते हैं। कुछ निर्णय सापेक्षित रूप में आवश्यक होते हैं जबकि अन्य बड़े महत्वपूर्ण होते हैं। कुछ निर्णय बिना सोचे -समझे लिए जाते हैं, जबकि और ऐसे भी हैं जिनके लिए पूरा दिमाग लगा देना पड़ता है। उन सभी निर्णयों के लिए जो हमें लेने आवश्यक हैं, इनसे महत्वपूर्ण कोई नहीं हैं:

- स्वर्ग में धन इकट्ठा करना या पृथ्वी पर धन इकट्ठा करना।
- ज्योति से भरे जीवन का दृष्टिकोण रखना या अन्धकार से भरे जीवन के दृष्टिकोण रखना।
- परमेश्वर की सेवा करना चुनना या धन की सेवा करना चुनना।

यदि हम मत्ती 6:19-24 के संदेश को समझ गए हैं तो हमारे लिए ये निर्णय लेने कठिन नहीं होने चाहिए। बेशकीमती चीज़ों को पाने के लिए कोई बेकार की चीज़ों को क्यों नहीं ठुकराएगा? कोई अन्धकार से बचने की इच्छा क्यों नहीं करेगा ताकि वह ज्योति में रह सके? इस मर रहे संसार की मिट रही चीज़ों की सेवा करने के बजाय कोई प्रेमी, सनातन पिता के आगे झुकना कौन नहीं चुनेगा?

हमारे वचन पाठ के प्रकाश में निर्णय लेने कठिन नहीं लगते। तौभी संसार भर में लोग इस जीवन और आने वाले जीवन के बारे में गलत निर्णय रोज़ लेते हैं। आप लेते हैं? आज क्या निर्णय लेते हैं? निर्णय लेने का समय यही है!

टिप्पणियां

[1]जहां आप रहते हैं उस समाज में लिए जाने वाले आदर्श स्वरूप निर्णय को दर्शाने के लिए इस पद्य को बदल लें। [2]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ द सरमन ऑन द माउंट,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1978), 155. [3]क्लोविस जी. चैप्पल, *दि सरमन ऑन द माउंट* (नैशविल्ले: अंबिग्डन-कोक्सबरी प्रैस, 1930), 179. [4]एलीशा के लिए नामान के उपहार का एक भाग वस्त्र था (देखें 2 राजाओं 5:5)। [5]देखें लूका 12:16-19. [6]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 541. [7]जहां आप रहते हैं वहां की परिस्थिति के अनुकूल बनाने के लिए इसे बदल लें। [8]डेविड एफ़ बर्गस, संक., *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ सरमन इलस्ट्रेशंस* (सेंट लुईस, मिजोरी: कोनकोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1988), 95 से लिया गया। [9]स्टॉट 156. [10]लेखक अज्ञात; फ्रैंक एल. कोक्स, *सरमन नोट्स ऑन द सरमन ऑन द माउंट* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1955), 17 में उद्धृत।

[11]ईस्ट साइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 10 अगस्त 2005 को दिया गया सबक, मेल स्टिन्नेट, ''चूज़िंग योर मॉस्टर।'' [12]यीशु ने कम से कम एक और अवसर पर ऐसा ही एक और रूपक इस्तेमाल किया (देखें लूका 11:33-36)। [13]रूपक अलंकार होता है जिसमें तुलना के शब्दों का इस्तेमाल किए बिना तुलना की जाती है (जैसे ''समान'' या ''जैसा'')। डी. आर. डंगन के अनुसार, विस्तृत या विस्तार दिया गया रूपक-कथा

है (*हर्मेन्यूटिक्स* [डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं], 258–260). [14]*Haplous* पर यह जानकारी वाल्टर ब्राउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट ऑन अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* चौथा संस्क., संशो. व विस्तार. विलियम एफ़. अर्डट एण्ड एफ़. विल्बर गिंगरिच (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 85. [15]*Poneros* पर यह जानकारी अर्डट एण्ड गिंगरिच, 697 से ली गई है। [16]डी. ए. करसन, ''मैथ्यू,'' *दि एक्सपोज़िटरी बाइबल कमैंट्री,* अंक 8 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1984), 178. [17]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनेशनल बाइबल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 60. [18] ''बैर'' और ''तुच्छ'' शब्दों का इस्तेमाल अन्तर के लिए किया गया है। यीशु तो केवल इतना कह रहा था कि कोई समान रूप से दो स्वामियों को समर्पित नहीं हो सकता। [19]वाइन, 562–63 नये नियम में, *doulos* आमतौर पर दासता का अर्थ नहीं देता पर मत्ती 6:24 में यीशु *स्वामी-दास* के सम्बन्ध की बात कर रहा था। [20]स्टॉट, 158 में उद्धृत।

[21]वही। [22]जैक पी. लुईस, *दि गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू, पार्ट 1,* दि लिविंग वर्ड्स कमैंट्री सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 107. [23]प्रासंगिकता किसी बात के लिए भी बनाई जा सकती है, जो हम पृथ्वी पर इकट्ठा करते हैं बनाई जा सकती है (इस पाठ में पहले ''धन'' की सूची देखें)। [24]किसी बात को ''व्यक्तिगत बनाने का अर्थ इसे ऐसे बोलना है जैसे यह व्यक्ति हो।'' [25]लुईस, 107. [26]''जे,'' आर्थर डब्ल्यू. पिंक, *एन एक्सपोज़िशन ऑफ़ द सरमन ऑन द मांउट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1950), 215–16 में उद्धृत। [27]ई. स्टेनले जोन्स, *दि क्राइस्ट ऑफ़ द माउंट* (न्यू यॉर्क: अबिंग्डन प्रैस, 1931), 220.